आधुनिक भारत में रामायण का जनजीवन पर प्रभाव

डॉ0 मनोज कुमार तिवारी*

रामायणमादिकाव्यं स्वर्गमोक्ष प्रदायकम्।
तस्माद् धोरे कलियुगे सर्वधर्मबहिष्कृते।।
दुर्लभैव कथा लोके श्रीमद्रामायणोद्भवा।
कोटि जन्मसमुत्थेन पुण्यैनैव तु लभ्यते।।

भारतीय संस्कृति के इतिहास मे रामकथा, उससे सम्बन्धित वाङ्मय उसके माध्यम से अभिव्यक्त होने वाली जीवन–चेतना और उस पर आधारित विविध–कालीन एवं विविध रूपी कला–सृजन का अप्रतिम महत्व है। महर्षि वाल्मीकि आदिकवि है, अतः विश्व के समस्त कवियों के गुरु हैं। उनका 'आदि काव्य' श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण भूतल का प्रथम काव्य है। इस कथा में मानवीय आचरण के जिन उदात्त आदर्शों और मूल्यों की प्रतिष्ठा हमें देखने को मितली है, उनकी उपयोगिता और महत्व किसी एक देश अथवा काल तक सीमित नहीं है। वह सभी के लिए वन्द्य है। भारत के लिये तो वह गौरव की वस्तु है, और देश की सच्ची बहुमूल्य राष्ट्रीय निधि है। इसके कारण भी वह सबके लिये मनन, पठन, संग्रह एवं श्रवण करने योग्य है। इसका एक–एक अक्षर महापातक का नाश करने वाला है।[1] श्रीव्यासदेवादि सभी कवियों ने इसी का अध्ययन कर पुराण, महाभारतादि का निर्माण किया।[2] यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आदि कवि ने किसी प्राचीन काव्य को बिना देखे, किसी ग्रन्थ से बिना सहारा लिये सर्वोत्तम काव्य का निर्माण किया। इसका प्राकृतिक चित्रण तो सौन्दर्ययुक्त है ही, संवाद भी सुन्दर है। हनुमान जी की वार्तालाप कुशलता सर्वथा देखने को मिलती है। श्रीराम की प्रतिपादनशैली, दशरथ जी की सम्भाषण पद्धति[3] किमधिकं कहीं–कहीं रावण का कथन भी[4] बहुत सुन्दर है। रामायण एक आदर्शवादी महाकाव्य है इसलिए यह ग्रन्थ धर्मशास्त्र के लिए तो परम प्रमाण है ही, अन्य ऐतिहासिक कथायें भी हैं, अर्थशास्त्र की भी पर्याप्त सामग्री है। व्यवहार तथा आचार की भी बातें हैं, कुशलमार्ग का भी प्रदर्शन है।

आज भारत ही नहीं अपितु विश्व में राजनीतिज्ञों के अवसरवादी एवं क्षुद्र आचरण से मानव व्यथित और चिन्तित है। ऐसी परिस्थिति में रामायण में राजनीतिक आदर्श पथप्रदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। वाल्मीकि के राजनीतिक विचार बहुत उच्च कोटि के हैं। उसके समक्ष समस्त राजनीतिक विचार तुच्छ प्रतीत होते हैं। ऋषि ने हनुमान के माध्यम से राजनीतिक मूल्यों को अभिव्यक्ति किया है जो नीति की मूर्ति प्रतीत होते हैं। रावण द्वारा निष्कासित होने पर जब विभिषण राम के शरण में आते हैं तो प्रश्न उठता है कि उसके साथ किस प्रकार का आचरण किया जाये। इस विषय पर राम अपनी परामर्श मण्डली से सम्मति मांगते हैं। स्वाभाविक सन्देह से प्रस्थान करते हुए सुग्रीव कहते हैं कि यह शत्रु का ही भाई है, पता नहीं क्यों अब अकस्मात् हमारी सेना में प्रवेश करना चाहता है। सम्भव है, अवसर पाकर उल्लू जैसे कौवों का बध कर देता है, वैसे यह हमें भी मार डाले। प्रकृति से राक्षस है, इसका क्या विश्वास, साथ ही नीति यह है कि मित्र की भेजी हुई, मोल ली हुई तथा जंगली जातियों की भी सहायता ग्राह्य है पर शत्रु की सहायता तो सदा संकटनीय है।[5] अंगद ने भी प्रायः ऐसी ही बात कहीं।[6] जामवन्त ने भी विचार व्यक्त किया कि हमें भी इसको आदेशकाल में आया देख बड़ी शंका हो रही है।[7] शरभ ने कहा कि इस पर गुप्तचर छोड़ा जाये, मन्द ने कहा कि इससे प्रश्न–प्रतिप्रश्न किये जायें, जिसके उत्तर से भाव जान लिए जायेगें।[8]

* सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर

इन सबका खण्डन विनम्र किन्तु प्रभावपूर्ण शैली में हनुमान ने किया। उन्होंने कहा कि प्रभो! आपके समक्ष वृहस्पति का भाषण भी तुच्छ है पर आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मैं विवाद, तर्क, स्पर्धा आदि के कारण नहीं, कार्य की गुरुता के कारण कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। आपके मन्त्रियों में से कुछ ने विभीषण के पीछे गुप्तचर लगाने की राय दी है, पर गुप्तचर तो दूर रहने वाले तथा 'अदृष्ट अज्ञानवृत्त' व्यक्ति के पीछे लगाया जाता है, यह तो प्रत्यक्ष ही सामने है, अपना नाम, काम भी स्वयं ही कह रहा है, यहाँ गुप्तचर का क्या उपयोग? कुछ लोगों ने कहा है कि 'यह अदेशकाल में आया है, किन्तु मुझे तो लगता है कि यही इसके आने का देशकाल है। आपके द्वारा वालि मारा गया और सुग्रीव को अभिषिक्त सुनकर आपके परम् शत्रु तथा बालि के मित्र रावण के संहार के लिए ही आया है। इससे प्रश्न करने की बात भी दोषयुक्त दिखती है, क्योंकि उससे इसके मैत्रीभाव में बाधा पहुंचेगी और यह मित्र दूषित करने का कार्य हो जायेगा यों तो आप कुछ भी बात करते समय इसके स्वर–भेद, आकार, मुख–विक्रिया आदि से इसकी मनः स्थिति भॉप ही लेगें। सुतरां मैने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार यह कुछ निवेदन किया, प्रमाण तो स्वयं आप ही हैं। हनुमान में यह गुण उनके लंका प्रवेश के बाद 13वें सर्ग का विमर्श, सीता से बात करने से पहले, किस भाषा में किस प्रकार बात करुँ, इत्यादि परामर्श, पुनः सीता से बात करके वापस चलने के समय द्तादि कर्त्तव्य एवं लंका के बलाबल की जानकारी लिए बिना किया गया उहापोह, सुग्रीव को भोगलिप्त देखकर दिया गया परामर्श तथा रावण को जो उपदेश किया है, उसमें इनकी अपूर्व नीतिमंत्रा रामभक्ति, विचार प्रवणता, साधुता तथा अप्रतिम बुद्धिमता प्रकट होती है। इन्हीं कारणों से उन्हें **'बुद्धिमतां वरिष्ठम्'** कहा गया है। स्वयं राम भी बार–बार इनके भाषण चातुर्य, बुद्धिकौशल पर चकित होते हैं। श्रीराम की नीतिमत्ता साधुता, सद्गुण सम्पन्नता तो सर्वोपरि है ही अनुज लक्ष्मण भी इसमें प्रवीण हैं। स्वर्ण मृग के रूप में आये मारीच को वे पहले ही राक्षस बताकर सावधान करते हैं। सीता से बार–बार कहते हैं कि श्रीराम पर कोई संकट नहीं है, अतः आप पर ही संकट आया दिखता है, यह सब राक्षसों की माया है,[10] इत्यादि। इसी प्रकार विभीषण आदि की बातें भी स्थान–स्थान पर दृष्टिगोचार हैं।

वस्तुतः ऋषि वाल्मीकि की दृष्टि में राजनीतिक और पारिवारिक कलह तथा षड्यंत्रों का एक प्रमुख कारण 'आवश्यक संदेह' प्रतीत हुआ। आवश्यक जागरूकता तथा सतर्कता तो अपनाना सही है किन्तु इसको बढ़ाते–बढ़ाते 'अति–सन्देह' तक पहुँचा देना अनिष्ट का कारण बन जाता है। इसी अविश्वास से कहल और षड़यंत्र जन्म लेते हैं। राम के राज्याभिषेक के प्रति कैकेयी के मन में मंथरा द्वारा संभावित अनिष्ट का अत्यन्त विकराल रूप प्रकट किया गया। फलस्वरूप राम को पुत्रवत् स्नेह करने वाली कैकेयी ने सब कुछ विस्मृत कर भरत को राजा और राम को चौदह वर्ष का बनवास का वर माँग लिया।[11] यह दशरथ की मृत्यु का कारण बना और इसी सन्देहयुक्त आचरण के कारण कैकेयी ने भरत का ही आदर और माँ के प्रति प्रेम खो दिया। सन्देह की यह छाया आगे और अधिक अनिष्ट कर देती, किन्तु राम–भरत के परस्पर विश्वास और प्रेम का प्रकाश इतना शक्तिशाली सिद्ध हुआ कि सन्देह की समस्त छाया लुप्त हो गयी और इसने न केवल कोसल राज्य में शांति और सद्भावना स्थापित की, अपितु ाने वाले आपत्तियों के समक्ष भी एक आदर्श प्रस्तुत किया। वानर राज्य में भाइयों के मध्य उत्पन्न संदेह की छाया विकराल हो गयी और इसने बालि–सुग्रीव के बीच के समस्त प्रेम को निगल लिया फलस्वरूप इसका अन्त बालि के वध से हुआ। सन्देह की यह छाया अंगद के मन में भी एक कोने में विद्यमान थी जो सीता की खोज के समय प्रतिकूल परिस्थिति में प्रकट हो गयी जिसे हनुमान द्वारा शान्त किया गया। इस प्रकार के संदेह कितना अनिष्ट कर सकते हैं इसका अनुमान हनुमान की बुद्धि आरम्भ से ही लगा लेती है। बालि से आतंकित एवं भयग्रस्त सुग्रीव के मन में राम लक्ष्मण के आने का समाचार मिलने पर संदेह उत्पन्न हुआ था जिसका समाधान हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण से वार्तालाप द्वारा हो गया था और अन्ततः सुग्रीव के संकट का हल हो गया। इस प्रकार रामायण में 'विश्वास' की राजनीति की महत्ता के साथ–साथ 'संदेह' के अनिष्ट को भी विभिन्न आयामों से प्रस्तुत किया गया है।

निःसंदेह रामायण एक महान् कृति है। उसमें एक ओर तो महान् निर्माता का अनुपम पाण्डित्य–प्रतिभा का समावेश है और दूसरी ओर जिस देश एवं जिस धरती में उसका निर्माण हुआ वहाँ के सामाजिक धार्मिक, आध्यात्मिक और आदर्शमय जीवन की समग्रताओं का एक साथ समावेश है। 'रामायण' अपने मूलरूप में संस्कृत साहित्य का आदि महाकाव्य और कतिपय परवर्ती महाकाव्यों, नाटकों, काव्यों का प्रेरणास्रोत ही नहीं, वरन् वह भारतीय परिवारों की धर्म–पोथी, भारतीय आचार–विचार संस्कार सम्बन्धों का आदर्श ग्रन्थ और भारत की चिरन्तन भक्ति भावना, ज्ञान भावना का प्रतिनिधि ग्रन्थ भी है। रामायण का प्रधान विशेषत्व यही है कि उसमें घर की ही बातें विस्तृत रूप से वर्णित हुई हैं। पिता–पुत्र में, भाई–भाई में, स्वामी–स्त्री में जो धर्म–बन्धन है जो प्रीति और भक्ति का सम्बन्ध जो आज भी समय सापेक्ष्य है, उसको रामायण ने इतना महान बना दिया। रामायण का समाज में बहुत प्रचार था। लव कुश, उसका गान करके उसको अभिनय के माध्यम से प्रदर्शित करके, अपनी आजीविका कमाते थे। रामचरित ज्यों–ज्यों लोकप्रिय, होता गया, त्यों–त्यों उसमें अलौकिकता भी आती गयी। आज सम्पूर्ण भारत में राम की महिमा एवं संस्कृति दिनों–दिन राममयी होती जा रही है। भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ, रामायण इसका श्रेष्ठतम् प्रतीक है। इस कथा से भी भारत में भौगोलिक एकता ध्वनित होती है एक ही कथा सूत्र में अयोध्या किष्किन्धा और लंका तीनों के बध जाने के कारण सारा देश एकरुप में दृष्टिगोचार होता है। इसका या इस कथा पर भारत की सभी भाषाओं में रामायण की रचना हुई है। जिनमें से प्रत्येक अपने–अपने क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय रही है तथा जिनके प्रचार के कारण भारतीय संस्कृति की एकरुपता में वृद्धि हुई है। रामायण ने भारतवर्ष के सांस्कृतिक जीवन और उसके इतिहास को कितना प्रभावित किया, इसके निरुपण में देशी विदेशी विद्वानों के द्वारा जितना कुछ कहा गया है, उसे एक ग्रन्थालय में संकलित करना भी संभव नहीं है।

खेद की बात है कि आज पूरे विश्व में चिन्तन और आचरण का परम्परागत घनिष्ठ सम्बन्ध खण्डित हो चुका है। कथनी और करनी एक–दूसरे से बहुत दूर हो गयी है। इस रूप में संसार के अधिकांश मनुष्यों के व्यक्तित्व विभाजित व्यक्तित्व बन गये हैं वस्तुतः रामकथा ही निश्चय ही पूरी सत्ता की अखण्ड एकात्मकता की प्रेरक चेतना जगा कर प्रत्येक स्तर के विधा तक प्रयासों और संघर्षों की वर्तमान और भावी संभावनाओं के निराकरण में अपूर्व योगदान दे सकती है। यही कारण है कि रामायण आज विश्व साहित्य कृति तथा महामुनि वाल्मीकि विश्वकवि के रूप में पूजित हो रहें है। आज भी ब्रह्मा जी की यह भविष्यवाणी चरितार्थ हो रही है।

''यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायण–कथा लोकेषु प्रचारिष्यति।।''[12]

संदर्भ :

1– एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्।
यह समस्त काव्यों का बीज है–
''काव्यबींज सनातनम्'' (बृहद्धर्म 01/30/47)

2– (क) पठ रामायणं व्यास काव्यबींज सनातनम्।
यत्र रामचरित्रं स्यात् तदहं तत्र शक्तिमानम्।।
(बृहद्धर्मपुराण, प्रथम खण्ड 30/47, 51)

(ख) रामायणं पाठिंत मे प्रसन्नोऽस्मि कृतरुवया।
करिष्यामि पुराणनि महाभारतमेव च।।
(बृहद्धर्म0 1/30/55)

3— अयोध्या काण्ड (द्वितीय सर्ग)।

4— लंकाकाण्ड (16वां सर्ग)

5— प्रविष्टः शत्रुसैन्यं हि प्राप्तः शत्रुरतर्कितः।
निहन्यादन्तरं लब्ध्वा उलूको वायसानिव।।
मंत्रे व्यूहे नये चारे युक्तो भवितुमर्हसि।
वानराणां च भद्रं ते परेषां च परंतप।।

(लंकाकाण्ड—17—19,20)

6— इत्युक्ते राधवायाथ मतिमानगंगादोऽग्रतः।
विभीषण परीक्षार्थमुवाच वचनं हरिः।
शत्रोः सकाशात् सम्प्राप्तः सर्वथा तर्क्य एव हि।
विश्वासनीयः सहसा न कर्त्तव्यों विभीषणः।। वही— 38,39

7— बद्धवैराच्च पापाच्य राक्षसेन्द्राद् विभीषणः।
अदेशकाले सम्प्राप्तः सर्वथा शंकयतामयम्। वही—46

8— अनुजो नाम तस्यैष रावणस्य विभीषणः।
पृच्छयतां मधुरेणायं शनैर्नरपतीश्वर। वही—48

9— वही, 51—68

10— अरण्यकाण्ड, 45,14,15

11— अयोध्याकाण्ड, 11, 26,26

12— वालमीकि रामायण, बालकाण्ड सर्ग, 2,36,37